कक्षा-III

पाठ 7 माहेश्वरसूत्र

पाठ 8 समरस्य-श्लोक-संग्रह

पाठ 9 एकात्मक स्तोत्र - एकता का गीत

पाठ 10 अमरकोश-स्वर्गवर्ग

7

माहेश्वरसूत्र

संस्कृत भाषा की ध्वनियाँ माहेश्वर सूत्रों में बताई गई हैं। ये सूत्र व्याकरण के प्रथम सोपान हैं। माहेश्वर सूत्रों की संख्या चौदह है। संस्कृत के सभी स्वर वर्ण और व्यंजन वर्ण इन चौदह माहेश्वर सूत्रों में दिये गये हैं।

उद्देश्य

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे–

- सभी 14 माहेश्वर सूत्रों का उच्चारण कर पाने में;
- संस्कृत भाषा की ध्वनियों को समझ पाने में; और
- प्रत्याहारों को चिह्नित कर पाने में।

7.1 माहेश्वर सूत्र

संस्कृत वर्णमाला के संबंध में एक कहानी है। भगवान शिव का एक नाम नटराज भी है। वे नृत्य मुद्रा में है। उनके हाथ में एक डमरू है। भारतीयों द्वारा, बौद्धों तथा तिब्बती परम्परा में दोनों तरफ से आवाज निकालने वाली डमरू प्रचलन में रही है। इस डमरू का संबंध भगवान शिव से रहा है। ऐसा माना जाता है कि विभिन्न

ध्वनियों की उत्पति करने के लिए भगवान शिव ने डमरू की उत्पति की। भगवान शिव के डमरू से उत्पन्न हुई ये ध्वनियां जिनसे कि संस्कृत वर्णमाला का निर्माण हुआ, माहेश्वर सूत्र कहलाते हैं।

संस्कृत व्याकरण के आधार ग्रंथ पाणिनि रचित 'अष्ठाध्यायी' में इन माहेश्वर सूत्रों को चौदह छंदरूप क्रम में सुनियोजित किया गया है।

महर्षि पाणिनि के अष्ठाध्यायी में कहा गया है कि पाणिनि की अष्ठाध्यायी जो प्रयोग में है भगवान शिव के आर्शीवाद से ही रचित है। इसलिए प्रथम सुनियोजित ध्वनियों को माहेश्वर सूत्र कहा गया है क्योंकि माहेश्वर शिव का ही दूसरा नाम है। नीचे पाणिनि की अष्ठाध्यायी से संकलित श्लोक दिया गया है–

uÙkkolku uVjktjktk uukn <ôk uoi¥pokjeA
m)Ùkdkek ludkfnfl)kfnurf}e'k f'kol=tkyeAA

अर्थ

ब्रह्मणीय नृत्य के सम्पन्न होने के बाद, नृत्य के देव शिव ने सनकादि महर्षियों को दर्शन से अभिभूत कर, अपने डमरू को चौदह बार बजाया जिसमें चौदह सूत्र निकले जो शिव सूत्र या माहेश्वर सूत्र के नाम से प्रसिद्ध हैं।

हमारी परम्परा में इन्हें 'अक्षरसमाम्नाय' भी कहते हैं जिसका अर्थ है ध्वनियों का उच्चारण। परंतु ये मुख्य रूप से शिव सूत्रों के नाम से प्रसिद्ध है क्योंकि यह माना जाता है कि शिव ने ही पाणिनि को ये सूत्र उद्घाटित किये थे। ये पाणिनि द्वारा अष्ठाध्यायी की रचना के समय अथवा उससे पूर्व संकलित किये गये।

क्र.सं.	सूत्र	
1.	अ इ उ ण्।	a - i - u - n
2.	ऋ ऌ क्।	r - lr - k
3.	ए ओ ङ्।	e - o - n
4.	ऐ औ च्।	ai - au - c
5.	ह य व र ट्।	ha - ya - va - ra - i
6.	ल ण्।	lam - n
7.	ञ म ङ. ण न म्।	ña - ma - na - na - na - m
8.	झ भ ञ	jha - bha - ñ
9.	घ ढ ध ष्।	gha - dha - dha - s
10.	ज ब ग ड द श्।	ja - ba - ga - da - da - s
11.	ख फ छ ठ थ च ट त व्।	kha - pha - cha - tha - tha - ca - ta - ta - v
12.	क प य्।	ka - pa - y
13.	श ष स र्।	sa - sa - sa - r
14.	ह ल्।	ha - l

I. वर्णमाला

इन उपर्युक्त चौदह सूत्रों में संस्कृत की संपूर्ण वर्णमाला दी गई है। स्वर हैं-अ, इ, उ, ऋ, ल, ए, ऐ, ओ, औ तथा शेष बचे वर्ण व्यंजन वर्ण हैं। सूत्रों के अंत में जो आधे वर्ण हैं वे निजी प्रयोगवश हैं।

ऋग्वेद के अनुसार इन चौदह सूत्रों को तथा संस्कृत भाषा को इस जगत में शिवजी लेकर आये थे। वर्णमाला की सभी ध्वनियों की उत्पति शिवजी के डमरू से हुई है।

इनका क्रम संस्कृत वर्णमाला के रूप में जाना जाता है। वर्ण शब्द से तात्पर्य है-वर्णान्श (syllable) तथा उसके उच्चारण में लाने वाले शरीर के अंगों के प्रयास (बाह्य और आन्तरिक)

II. प्रत्याहार

प्रत्याहार सूत्रों के प्रथम अक्षर तथा अंतिम अक्षर के बीच के अनेक वर्णों को दर्शाते हैं। पाणिनि रचित अष्ठाध्यायी के माहेश्वर सूत्रों के प्रथम अक्षर तथा अंतिम अक्षरों से मिलकर बनते हैं, जैसे-अक्, अच्, हल् इत्यादि। इस तरह के संक्षिप्तिकरण का उल्लेख पाणिनि के पूर्व संभवत: इन्द्र को समर्पित व्याकरण में भी मिलता है। इस तरह के संक्षिप्तिकरण में लाघव का सिद्धांत है। यह एकमत का विषय नहीं है कि पाणिनि ने इस तरह ध्वनयात्मक तरीके का प्रयोग स्वयं से किया है या फिर इस तरह का प्रयोग अपने आप हुआ जिनका प्रयोग पाणिनि की अष्ठाध्यायी में करते हैं। इस तरह के प्रयोग का एक उदाहरण देखते हैं-

इकोयणचि - अष्ठाध्यायी 6.1.77

- इक् से तात्पर्य है - इ उ ऋ ल
- इको तात्पर्य इक् से है जिसका अर्थ है इ, उ, ऋ लृ के स्थान पर

- यण् अर्थात य, व, र ल (अर्द्ध स्वर)

ये आदेश है जिसका अर्थ होता है इ, उ ऋ, लृ के स्थान पर य, व, र, ल हों।

- अच् का अर्थ है स्वर, जो कि पाठ में पूर्व के बताये गये है।
- अचि इसलिए इसका अर्थ है स्वर परे रहते।

इस तरह स्वर से परे रहते इ, उ, ऋ, लृ (स्वर वर्णों-4) के स्थान पर य, व, र, ल (अर्द्ध स्वर) होते हैं। इसलिए ''दधि अत्र'' में इ के स्थान पर य होने से (स्वर परे रहते) दध्यत्र रूप विष्पन्न होता है।

पाठगत प्रश्न 7.1

I. रिक्त स्थानों की पूति कीजिए-

1. संस्कृत की ध्वनियों की निर्देशित करने वाले माहेश्वर सूत्र-संख्या में ..... हैं।
2. ..... अष्ठाध्यायी के लेखक है।
3. ..... के द्वारा संस्कृत वर्णमाला के क्रम को अवतरित किया गया है।
4. संस्कृत वर्णमाला का क्रम ..... कहलाता है।

आपने क्या सीखा

माहेश्वर सूत्र सर्वाधिक प्रचलित संस्कृत वर्णमाला रूप है। संस्कृत वर्णमाला की उत्पति माहेश्वर सूत्रों से हुई है। संस्कृत व्याकरण के आधार मूल चौदह माहेश्वर सूत्र संस्कृत की ध्वनियां हैं जिनका उल्लेख पाणिनि की अष्ठाध्यायी में किया गया है। ये चौदह माहेश्वर सूत्रों में संस्कृत की संपूर्ण वर्णमाला की गई है अर्थात् स्वर और व्यंजन।

पाठांत प्रश्न

1. संस्कृत वर्णमाला बताईये।
2. प्रत्याहार क्या होते हैं?

उत्तरमाला

7.1

1. चौदह
2. पाणिनि
3. भगवान शिव
4. वर्णमाला